10. प्रहेलिकाः

प्रहेलिका अर्थात् पहेली, अन्य लोकभाषाओं की तरह संस्कृत में भी लोगों के ज्ञानवर्धन व मनोरंजन का साधन रही हैं। पहेलियों के विविध रूप हमारे बुद्धि कौशल को दर्शाते हैं। प्रहेलिकाएं एक कूट प्रश्न की तरह हैं जो सामने वाले की बुद्धि परीक्षा के लिए होती हैं। इस पाठ में हम कुछ ऐसी ही प्रहेलिकाओं के स्वरूप को देखने व समझने का प्रयत्न करते हैं।

प्रथमः एकांशः

1. अपदो ... स पण्डितः।

एतादृशं कः जानाति! अपदः=(i) यः पद्भ्यामः, रहितः (ii) दूरगामी=दूरं गन्तुं शीलं यस्य सः दूर तक जाने वाले (iii) साक्षरः=अक्षरेण सह विद्यमानः पढ़ालिखा। (स+अक्षरः) अक्षरों से युक्तः च अस्ति, परं सः न पण्डितः=विद्वान् नैव अस्ति। एवमेव तस्य नास्ति मुखं यस्य सः (मुखरहित है) स्फुटवक्ता=स्पष्ट अर्थात् साफ साफ बोलने वाला है, ऐसे को जो जानता है, वही पण्डित=विद्वान है। उपर्युक्त श्लोक में छः शब्द एक प्रश्न की तरह हैं जिनका 'उत्तर' एक शब्द में ही अपेक्षित है। **अर्थात्**–अपदः–दूरगामी, साक्षरः–न तु पण्डितः, अमुखः,–स्फुटवक्ता च। यहां तीन विरोधाभास हैं। जिनका उत्तर एक ही है वह है 'पत्रम्'। **अर्थात्** पत्र-पैर न होने पर भी दूर तक जाता है, अक्षरों से युक्त है किन्तु वह विद्वान नहीं है, मुख नहीं है, पर पढ़ने से ऐसा लगता है जैसे वह ज्यों का त्यों बोल रहा है।

2. <u>केशवं</u> ....गत

[श्रीकृष्ण को गिरा देखकर द्रोण प्रसन्न हुए। सभी कौरव रोने लगे कि हाय, केशव तुम कैसे इस जहां से चले गए!] किन्तु यह अर्थ समीचीन नहीं है। अतः यहां तीन शब्द द्व्यर्थक हैं, उन्हें जानकर ही यह पहेली समझ में आयेगी।

अर्थात (i) के (जले) शवः (मृत शरीर) (ii) द्रोणः (काला कौआ) (iii) कौरवाः (गीदड़)

तब अर्थ होगा–जले में पड़े शव को देखकर काला कौआ बहुत प्रसन्न हुआ, किंतु गीदड़ रो रहे हैं कि जल में यह मृत शरीर कैसे पहुंचा। अब तो हमारे योग्य नहीं रहा।

3. **वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः .....**

अस्यां प्रहेलिकायाम् अपि चत्वारः विरोधाभासाः सन्ति। परम् उत्तरं तु एकपदे एव।

विरोधाभासाः (i) वृक्षाग्रवासी – न च पक्षिराजः (गरुड़ः) [वृक्ष+अग्रवासी]

(ii) त्रिनेत्रधारी – न च शूलपाणिः (शङ्करः)

(iii) त्वक् वस्त्रधारी –न च सिद्धयोगी (जटाधारी महात्मा)

(iv) जलं च बिभ्रत् – न घटः न मेघः (न घड़ा, न बादल)

बिभ्रत् (धारण करता हुआ) उत्तरम्=नारिकेलम् (नारियल) नारियल में उक्त चारों विरोध सार्थक सिद्ध हैं।

4. किमिच्छन्ति ..... देवानाम्

इस पहेली में तीन प्रश्न हैं। इनके उत्तर एक शब्द में हैं– जो पहेली के बाहर से है।

(i) किमिच्छन्ति नराः काश्याम्? मृत्युम् (काश्यां मरणान्मुक्तिः)

(ii) भूपानां को रणे हितः? जयः (जीत)

(iii) को वन्द्यः सर्वदेवानाम्? सभी देवताओं के लिए वन्दनीय कौन? मृत्युञ्जय=(शिव)

5. आनन्दयति इस पहेली में दो प्रश्न हैं तथा दोनों प्रश्नों का उत्तर एक शब्द में हैं=जो बाहर से है। वह है 'मित्रोदयः' (i) कः भूतले सज्जनान् अत्यर्थम् आनन्दयति एव? धरती में सज्जनों को अत्यधिक आनन्दित कौन करता है? उत्तरम्–मित्रोदयः= मित्र की समृद्धि (ii) कः पद्मानि प्रबोधयति तमांसि च निहन्ति=मित्रोदयः=सूर्य का उदय।

6. भोजनान्ते इस पहेली में पूछे गए तीनों प्रश्नों का उत्तर पहेली में ही है। तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।

   प्रश्नाः (i) भोजन के बाद क्या पीना चाहिए? = तक्रम् (छाछ/मट्ठा)।

   (ii) जयन्त किसका पुत्र है? = शक्रस्य (इन्द्र का)

   (iii) विष्णु पद कैसा कहा गया है? = दुर्लभम् (कठिन)

7. कं संजघान कृष्णः इस पहेली में चार प्रश्न हैं किंतु प्रश्नवाक्य में उत्तर छिपा हुआ है जो प्रश्नवाक्य को दूसरे ढंग से पढ़ने पर मिल जाता है। जैसे

   (i) कं संजघान कृष्णः – कृष्ण ने किसको मारा? उत्तर कंसम्

   (ii) का शीतलवाहिनी गङ्गा – शीतलप्रवाहवाली गंगा कौन सी है? = काशीतलवाहिनी

   (iii) के दारपोषणरताः – कौन लोग अपनी पत्नियों के पालन में लगे हैं? (केदारपोषणरताः)

   (iv) किस बलवान को ठंड नहीं सताती? कं बलवन्तं न बाधते शीतम्? (कंबलवन्तम्)

8. सीमन्तिनीषु– इस पहेली में तीन प्रश्न हैं तथा तीनों के उत्तर प्रत्येक प्रश्न में आदि-अन्तिम अक्षर को मिलाने से प्राप्त हो जाते हैं।

सीमन्तिनीषु का शान्ता?	(i)	स्त्रियों में कौन सी शान्त स्त्री है? सीता
राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः	(ii)	गुणों में उत्तम राजा कौन हुआ है? रामः
विद्वभ्दिः सदा का वन्द्या	(iii)	विद्वानों के द्वारा सदा पूज्य कौन है? विद्या

प्रश्नाः

1. **अधोलिखितासु पङ्क्तिषु रेखाङ्कितपदानाम् अर्थं स्पष्टीकुरुत।**

   (i) अमुखः स्फुटवक्ता च।

   (ii) केशवं पतितं दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागतः।

   (iii) वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः।

   (iv) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।

2. **प्रहेलिकानुसारम् प्रश्नान् उत्तरत।**

   (i) भूपानां को रणे हितः?

   (ii) कः पद्मानि प्रबोधयति तमांसि च निहन्ति?

   (iii) कीदृग् विष्णुपदं प्रोक्तम्?

   (iv) कं संजघान कृष्णः?

   (v) सीमन्तिनीषु का शान्ता?

3. **अस्मिन् पाठे लट्लकारे प्रयुक्तानि क्रियापदानि विचित्य सार्थं लिखत।**

   यथा– जानाति (ज्ञा) (प्र.पु.ए.व.) = जानता है।

   रुदन्ति (रुद) (प्र.पु.बहु.व.) = रोते हैं।